वॉयस ऑफ
लखनऊ
राष्ट्रीय दैनिक
लखनऊ ■ मंगलवार 28 मई 2013 ■ महानगर

किसानों के प्रयोगों से मजबूत होगी कृषि अर्थव्यवस्था

❑ यूपी व उत्तराखंड के किसानों ने बतायीं नयी विधियां

प्रमुख संवाददाता

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र के वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के 17 नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों पर किये गये नये प्रयोग तथा इससे अर्जित आय को प्रस्तुत किया जो कि वास्तव में बहुत ही सुखद एवं हर्ष का विषय है। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा. के.डी. कोकाटे, उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृषकों की सफलता से कृषि विज्ञान केन्द्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों से अनुरोध किया कि खेती में इस प्रकार के अनूठे प्रयोग को जरूर लेखांकित करें तथा इन प्रयोगों को क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। जिससे प्रदेश तथा देश में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी तथा हमारे किसान समृद्ध होंगे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने सभी नवोन्वेषी कृषकों तथा उनके साथ मिलकर काम करने वाले कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी।

बराबंकी के किसान राम सरन वर्मा के द्वारा टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती में प्राप्त सफलता के प्रस्तुतीकरण ने सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों तथा साथी किसानों को आगे बढ़ने की प्रेरणा से ओतप्रोत कर दिया। राम सरन वर्मा केला खेती से प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख रुपये का लाभ अर्जित कर रहे हैं। साथ ही वर्मा केला के साथ टमाटर की उन्नत खेती कर 3 से 4 लाख प्रति एकड़ लाभ अर्जित कर रहे हैं। खुद का उनके पास सिर्फ 7 एकड़ जमीन है लेकिन अपने अथक प्रयासों की वजह से आज वह अस्सी एकड़ खेत में केला, आलू, टमाटर, मैंथा तथा अन्य सब्जियों की खेती सफलतापूर्वक करके प्रदेश एवं देश के किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। सहारनपुर के प्रगतिशील किसान सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ 3 से 3.5 लाख रुपया अर्जित कर रहे हैं। सेत पाल कहते हैं कि सब्जी खेती से उनको दैनिक आधार पर आमदनी प्राप्त होता है जिससे उनको कभी भी पैसे की कमी का एहसास नहीं होता। उन्होंने अपने खेत में सिंघाड़े के खेती की तथा सिंघाड़े के तोड़ाई बाद मेंथी, लोबिया, फ्रेंचबीन तथा करेला एवं लौकी को मचान पर खेती कर अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं। सहारनपुर के ही अन्य किसान राजपाल सिंह वर्ष 2000 में लीची तथा आड़ू की खेती शुरू की तथा तीन वर्ष के बाद लगभग 5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर लीची उत्पादन से प्राप्त कर रहे हैं साथ ही 2 से 2.5 लाख रुपया आड़ू से तथा 1.5 लाख रुपया प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे हैं।

लखनऊ के देव नारायण पटेल की सफलता की कहानी भी इन कृषकों से भिन्न नहीं है। श्री पटेल ने खेती में अपनी सफलता को बताते हुए कहा कि 1.4 हेक्टेयर भूमि से नगदी फसलों की खेती कर प्रतिवर्ष लगभग 4.0 लाख रुपये शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं। उन्होंने धान, गेहूं की परंपरागत खेती से किनारा करते हुए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा, गन्ना आदि नगदी फसलों की तरफ रुख करते हुए अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं। कुशीनगर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान बसन्तकालीन गन्ने के साथ भिंडी तथा लोबिया एवं शरदकालीन गन्ने के साथ प्याज और लहसन की खेती कर अपनी आय दुगुना कर रहे हैं। डा. ए.के. साह, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि इस सफलता से प्रेरित होकर संस्थान निकट भविष्य में गन्ना उत्पादन तकनीकों पर इन क्षेत्रों में नवीन तकनीकों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से सघन प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेगा। जिससे गन्ना खेती में विविधीकरण के प्रयोग से किसानों की आमदनी दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगी।

किसानों ने साझा किए अपने अनुभव

जागरण संवाददाता, लखनऊ : देवनारायण पटेल 1.4 हेक्टेयर खेत में नकदी फसल उगाकर हर साल 4 लाख रुपये का लाभ कमा रहे है। कुशीनगर के किसान बसंतकालीन गन्ने के साथ भिंडी व लोबिया व शरदकालीन गन्ने के साथ प्याज व लहसुन की खेती कर दोगुना लाभ कमा रहे है। वही, बाराबंकी के किसान राम सरन वर्मा ने टिश्यू कल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती से प्रति एकड़ 2 से ढाई लाख रुपये का लाभ अर्जित कर रहे है। केले के साथ टमाटर की उन्नत खेती कर 3 से 4 लाख प्रति एकड़ कमा रहे है।

किसानों ने यह जानकारी भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आइआइएसआर) में चल रही कृषि विज्ञान केंद्रों की कार्यशाला में दी। उन्होंने बताया कि केवल 7 एकड़ जमीन उनके पास है, लेकिन अथक प्रयासों से वह अस्सी एकड़ खेत में केला, आलू, टमाटर, मेंथा व अन्य सब्जियां पैदा कर रहे है। सहारनपुर के सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ 3 से 3.5 लाख रुपया अर्जित कर रहे है। उन्होंने खेत में सिंघाड़े की खेती की व तोरई के बाद मेथी, लोबिया लगाई। सहारनपुर से आए किसान

◆ कृषि विज्ञान केंद्रों में कार्यशाला

राजपाल सिंह ने 13 साल पहले लीची व आड़ू की खेती शुरू की। आज वह 5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर लीची का उत्पादन कर रहे है। साथ ही 2 से 2.5 लाख रुपये आड़ू व 1.5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे है। उन्होंने बताया कि शहद उत्पादन से भी हर डेढ़ लाख रुपये तक अर्जित कर लेते है।

आइआइएसआर द्वारा नवोन्वेषी किसान सम्मेलन में प्रदेश व उत्तराखंड के डेढ़ दर्जन किसान भाग ले रहे है। इन किसानों ने अपने अनुभवों को अन्य किसानों के साथ साझा किया। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, उप महानिदेशक डॉ. केडी कोकाटे ने कहा कि किसानों के अनुभवों से अन्य किसानों को प्रेरणा मिलेगी। आइआइएसआर के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि कृषि विज्ञान केंद्रों की सहायता से गन्ना उत्पादन की नवीन तकनीकों का प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया जाएगा।

कैनविज टाइम्स
4 मंगलवार, 28 मई 2013

खेती से हो रही आय सुन वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ा

कार्यशाला में किसानों ने सुनाई सफलता की कहानी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

❑ भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कार्यशाला का दूसरा दिन किसानों के नाम रहा

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान लखनऊ में आयोजित कार्यशाला के दूसरे दिन किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के 17 प्रगतिशील किसानों ने अपनी सफलता की कहानी सुनाई। खेती से होने वाली आय के बारे में भी बताया। उनकी कहानी सुनकर वैज्ञानिकों का हौसला बढ़ा।

बराबंकी जनपद के किसान राममरन वर्मा की ओर से टिश्यू कल्चर तकनीक से केला की खेती में प्राप्त सफलता के प्रस्तुतिकरण ने सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों तथा साथी किसानों को आगे बढ़ने की प्रेरणा से ओतप्रोत कर दिया। श्री वर्मा केला खेती से प्रति एकड़ दो से ढाई लाख रुपए का लाभ अर्जित कर रहे हैं। केला के साथ टमाटर की उन्नत खेती कर तीन से चार लाख प्रति एकड़ लाभ अर्जित कर रहे हैं। खुद की उनके पास सिर्फ सात एकड़ जमीन है, लेकिन अपने अथक प्रयासों की वजह से आज वह अस्सी एकड़ खेत में केला, आलू, टमाटर, मैंथा तथा अन्य सब्जियों की खेती सफलतापूर्वक करके प्रदेश एवं देश के किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

सहारनपुर के सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ तीन से साढ़े तीन लाख रुपए अर्जित कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि सब्जी की खेती से उनको दैनिक आधार पर आमदनी प्राप्त होती है। जिससे उनको कभी भी पैसे की कमी का एहसास नहीं होता। अपने खेत में सिंघाड़े की खेती की। सिंघाड़े की तोड़ाई के बाद मेंथी, लोबिया, फ्रेंचबीन तथा करेला एवं लौकी को मचान पर खेती कर अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं।

सहारनपुर के ही राजपाल सिंह ने वर्ष 2000 में लीची तथा आड़ू की खेती शुरू की तथा तीन वर्ष के बाद करीब पांच लाख रुपए प्रति हेक्टेयर प्राप्त कर रहे हैं। दो से ढाई लाख रुपए आड़ू से तथा डेढ़ लाख रुपए प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। शहद उत्पादन से भी श्री सिंह करीब सवा लाख सालाना कमा रहे हैं।

लखनऊ के देवनारायण पटेल ने कहा कि 1.4 हेक्टेयर भूमि में नकदी फसलों की खेती कर प्रतिवर्ष लगभग चार लाख रुपए शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं। धान, गेहूं की परम्परागत खेती से किनारा करते हुए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा, गन्ना आदि की खेती करनी शुरू कर दी है।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (कृषि प्रसार) डॉ. केडी कोकाट ने कहा कि इन किसानों की सफलता से कृषि विज्ञान केंद्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी।

संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने सभी को बधाई दी। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि इस सफलता से प्रेरित होकर संस्थान निकट भविष्य में गन्ना उत्पादन तकनीकों पर इन क्षेत्रों में नवीन तकनीकों पर कृषि विज्ञान केंद्रों की सहायता से सघन प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेगा।

02 श्री टाइम्स
लखनऊ मंगलवार 28 मई, 2013

सुझाव | खेती भी हो सकती है आय का जरिया

सफलता की कहानी, किसानों की जुबानी

विशेष प्रतिनिधि

लखनऊ। यूपी के साथ उत्तराखंड के दर्जनभर से ज्यादा किसानों ने बताया कि वह अपने खेतों में नये-नये प्रयोग करके कैसी अपनी आमदनी में इजाफा किये हैं। मौका था भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र के वार्षिक कार्यशाला का, दूसरे दिन नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा. के.डी. कोकाटे, उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृषकों की सफलता से कृषि विज्ञान केन्द्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों से अनुरोध किया कि खेती में इस प्रकार के अनूठे प्रयोग को जरूर लेखांकित करें तथा इन प्रयोगों को क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। जिससे प्रदेश तथा देश में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी तथा हमारे किसान समृद्ध होंगे।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन 17 किसानों ने बताए खेती में कैसे हुआ फायदा

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन ने सभी नवोन्वेषी कृषकों तथा उनके साथ मिलकर काम करने वाले कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी। बराबंकी जनपद के किसान राम सरन वर्मा द्वारा टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती में प्राप्त सफलता के प्रस्तुतीकरण ने सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों तथा साथी किसानों को आगे बढ़ने की प्रेरणा से ओतप्रोत कर दिया। राम सरन वर्मा केला खेती से प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख रूपये का लाभ अर्जित कर रहे हैं। साथ ही वर्मा जी केला के साथ टमाटर की उन्नत खेती कर 3 से 4 लाख प्रति एकड़ लाभ अर्जित कर रहे हैं। खुद का उनके पास सिर्फ 7 एकड़ जमीन है लेकिन अपने अथक प्रयासों की वजह से आज वह अस्सी एकड़ खेत में केला, आलू, टमाटर, मैथा तथा अन्य सब्जियों की खेती सफलतापूर्वक करके प्रदेश एवं देश के किसानों के लिए आदर्श बने हुए हैं। सहारनपुर के प्रगतिशील किसान सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ 3 से 3.5 लाख रूपया अर्जित कर रहे हैं। सेतपाल जी कहते हैं कि सब्जी खेती से उनको दैनिक आधार पर आमदनी प्राप्त होता है जिससे उनको कभी भी पैसे की कमी का एहसास नहीं होता। उन्होंने अपने खेत में सिंघाड़े के खेती की तथा सिंघाड़े के तोड़ाई उपरांत मेंथी, लोबिया, फ्रेंचबीन, करेला एवं लौकी को मचान पर खेती कर अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं। सहारनपुर जनपद के ही अन्य किसान राजपाल सिंह वर्ष 2000 में लीची तथा आड़ू की खेती शुरू की तथा तीन वर्ष के पश्चात लगभग 5 लाख रूपये प्रति हेक्टेयर लीची उत्पादन से प्राप्त कर रहे हैं साथ ही 2 से 2.5 लाख रूपया आड़ू से तथा 1.5 लाख रूपया प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे हैं।

6 डेली न्यूज़ एक्टिविस्ट
लखनऊ, मंगलवार, 28 मई 2013

खेती में नए प्रयोगों को किया साझा

लखनऊ (डीएनएन)। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान (आईआईएसआर) में आयोजित कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित कार्यशाला के दूसरे दिन नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड के 17 नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों पर किए गए नए प्रयोग के बारे में जानकारियां दी। साथ ही इससे होने वाली आय के बारे में भी बताया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक डॉ. केडी कोकाट ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृषकों की सफलता से कृषि विज्ञान केंद्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उन्होंने कार्यक्रम समन्वयकों से अनुरोध किया कि खेती में इस प्रकार के अनूठे प्रयोग को जरूर लेखांकित करें और इन प्रयोगों को क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। जिससे प्रदेश और देश में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी और किसानों को भी फायदा मिलेगा। संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने सभी नवोन्वेषी कृषकों और उनके साथ मिलकर काम करने वाले कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी।

- **आईआईएसआर में नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का हुआ आयोजन**

बराबंकी जनपद के किसान राम सरन वर्मा के द्वारा टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती से होने वाली सफलता को सभी से लोगों को रूबरू कराया गया। राम सरन वर्मा केला खेती से प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख रुपए का लाभ कमा रहे हैं। साथ ही उन्हें केला के साथ टमाटर की खेती से 3 से 4 लाख प्रति एकड़ लाभ हो रहा है। सहारनपुर के किसान सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ 3 से 3.5 लाख रुपए कमा रहे हैं। उन्होंने अपने खेत में सिंघाड़े की खेती की और सिंघाड़े की तोड़ाई उपरांत मेंथी, लोबिया, फ्रेंचबीन, करेला और लौकी को मचान पर खेती कर अपनी आमदनी को बढ़ा रहे हैं।

सहारनपुर जनपद के ही किसान राजपाल सिंह वर्ष 2000 में लीची और आड़ू की खेती से 5 लाख रुपए प्रति हेक्टेयर लीची उत्पादन से प्राप्त कर रहे हैं। साथ ही 2 से 2.5 लाख रुपए आड़ू से और 1.5 लाख रुपए प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी हो रही है। शहद उत्पादन से भी राजपाल सिंह 1.20 हजार सलाना आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। लखनऊ के देव नारायण पटेल 1.4 हेक्टेयर भूमि से नगदी फसलों की खेती कर हर साल लगभग 4 लाख रुपए शुद्ध लाभ प्राप्त कर रहे हैं। वह धान, गेहूं की परंपरागत खेती से किनारा करते हुए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा, गन्ना आदि नगदी फसलों से अच्छी कमाई कर रहे है।

the pioneer
LUCKNOW TUESDAY | MAY 28, 2013

Innovative farmers share success stories at IISR

PIONEER NEWS SERVICE ■ LUCKNOW

An innovative farmers' meet was organised at Indian Institute of Sugarcane Research, Lucknow during the second day of annual zonal workshop of Krishi Vigyan Kendras (KVKs) of zone-IV on Monday. The session was chaired by KD Kokate, deputy director general (Agriculture Extension), ICAR, New Delhi while YPS Dabas, Babu Ram, Lakhan Singh were present as conveners.

In the session, 17 farmers from Uttar Pradesh and Uttarakhand presented and shared their innovations in farming which earned high profits for them. On the occasion, IISR director Dr Solomon congratulates the farmers and KVK personnel for their achievement in farming.

Ram Saran Verma, a progressive farmer from Barabanki, presented his success story in banana cultivation with tissue culture technique. Verma is earning Rs 2-2.5 lakh per acre from banana cultivation and Rs 3-4 lakh per acre from tomato cultivation. Farmers from all over the country are approaching him to get the hang of his innovative methods.

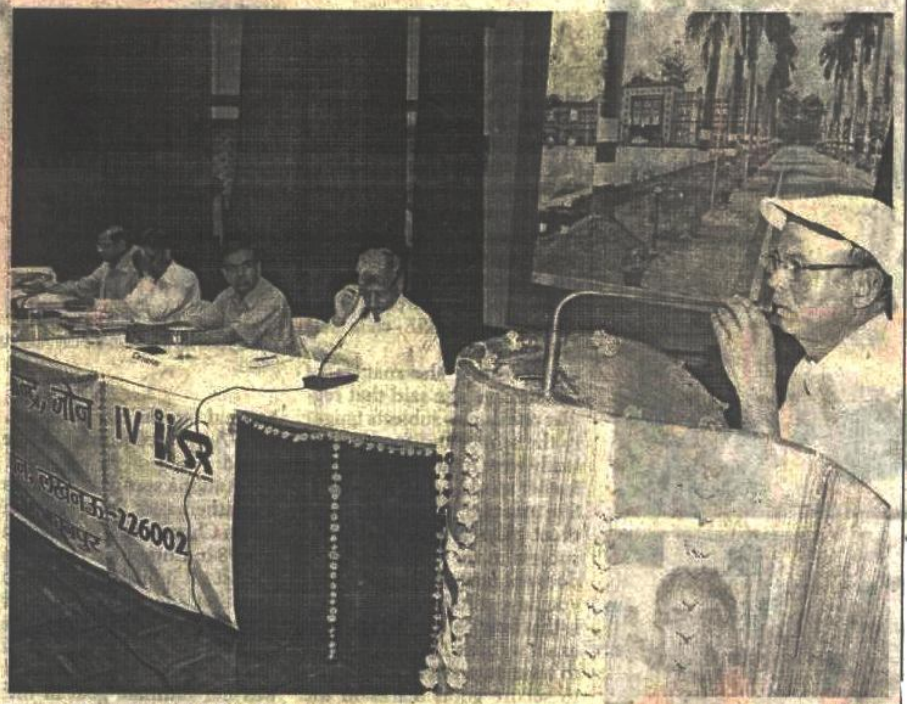

Innovative farmers' meet at IISR on Monday Pioneer

Setpal Singh from Saharanpur said that intensive vegetable cultivation system gave him a net income of Rs 3 to 3.5 lakh per acre. The crop rotation of *singhada*, *menthe*, *lobia*, Frenchbean, bittergourd, bottlegourd and spinach facilitated him regular income on daily basis.

Another farmer from Saharanpur, Rajpal Singh shared his experiences on litchi and peach farming. He said from the third year onwards, he started earning Rs 2-2.5 lakh per hectare from peach and Rs 5 lakh per hectare from litchi. At the same time, he is earning an additional annual income of Rs 1.2 lakh from bee keeping.

Dev Narayan Patel of Gosainganj is earning Rs 4 lakh per year just from 1.5 hectare land by cultivating cash crops like *satavar*, green onion, garlic, menthe and sugarcane. The farmers of Kushinagar are doubling their farm income by cultivating inter-crops like okra, cowpea, onion and garlic with sugarcane.

"This success stories are an inspiration for IISR to plan and conduct intensive demonstration on intercropping with sugarcane over larger area of UP," senior scientist AK Sah said. At the end of the programme, Kokate appreciated the efforts of farmers and KVKs in achieving high income from farming.

अमरउजाला लखनऊ | मंगलवार | 28 मई 2013

नई खेती से लिख रहे सफलता की इबारत

लखनऊ (ब्यूरो)। नए प्रयोगों से अब तक बचते रहे प्रदेश के किसान अब इन्हें अपना रहे हैं। इसका फायदा उन्हें अपनी जमीनों से दो से तीन गुना तक आमदनी के रूप में सामने आ रहा है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी लखनऊ में आयोजित तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला में आए इन किसानों की सफलता की कहानियों को सुन सहज अंदाजा लगाया जा सकता है कि वे किस तरह नए प्रयोग व तकनीक खेती में शामिल कर उन्नति कर रहे हैं।

कार्यशाला में 18 किसानों ने अनुभव किए साझा

कार्यशाला के दूसरे दिन सोमवार को भी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक डॉ. केडी कोकाटे अध्यक्ष रहे। उन्होंने किसानों द्वारा किए जा रहे प्रयोगों को समझा और इन अनुभवों को देश के बाकी किसानों के लिए अनुकरणीय बताया। इस दौरान 18 किसानों ने अपने अनुभव साझा किए। इनमें से एक लखनऊ के देवनारायण पटेल ने बताया कि किस तरह उन्होंने अपने डेढ़ हेक्टेयर भूमि पर परंपरागत खेती के बजाए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा जैसे नकदी फसलों को अपनाया और उनका लाभ तीन गुना हो गया।

वहीं, कुशीनगर के किसान सर्दियां खत्म होने पर गन्ने के साथ भिंडी व लोबिया और सर्दियों में गन्ने के साथ प्याज और लहसुन उगाकर अपनी आय बढ़ा रहे हैं। कार्यशाला में मंगलवार को आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एस अयप्पन यहां नई केवीके इमारत का शुभारंभ करेंगे। साथ ही वे आईसीएआर के एक अन्य संस्थान नेशनल ब्यूरो ऑफ फिश जेनेटिक्स एंड रिसर्च में आयोजित एक कार्यशाला में भी शामिल होंगे।

टिशू कल्चर्ड केले से दोगुना फायदा

बाराबंकी में केले का उत्पादन लंबे समय से हो रहा है। यहां के किसान प्रति एकड़ 1 से सवा लाख रुपए तक केले की खेती से कमा लेते हैं। इन्हीं में से एक किसान रामसरन वर्मा ने सरकार की सहायता से टिशूकल्चर्ड केले की पौध प्राप्त की और खेती की। इसका फायदा भी उन्हें मिल जब प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख कीमत के केलों का उत्पादन हुआ। उनके पास सिर्फ 7 एकड़ जमीन है।

लगातार आमदनी देते हैं खेत

सहारनपुर को गन्ना, गेहूं और धान जैसी पारंपरिक फसलों के लिए जाना जाता है। जिनसे प्रति एकड़ बमुश्किल 60 से 80 हजार की आमदनी हो पाती थी, लेकिन सेतपाल सिंह ने कुछ अलग करने की ठानी और अपने 40 एकड़ खेतों में सब्जी उत्पादन शुरू किया और आमदनी को 3 से साढ़े 3 लाख तक पहुंचा दिया। सेतपाल ने बताया कि सब्जियों के उत्पादन से उन्हें सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि वे लगातार आमदनी पाते हैं और आर्थिक रूप से मजबूत हुए हैं।

राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
...दून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ | मंगलवार • 28 मई • 2013

नये प्रयोगों से खूब कमा रहे किसान

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन सोमवार को नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस मौके पर प्रदेश के साथ ही उत्तराखण्ड के 17 नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों पर किये गये नये प्रयोग तथा इससे अर्जित आय की जानकारी दी।

▶ कृषि विज्ञान केन्द्रों की कार्यशाला

इस मौके पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप महानिदेशक (प्रसार) डा. केडी कोकाटे ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृपकों की सफलता से कृषि विज्ञान केन्द्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों से कहा कि इन प्रयोगों को क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। जिससे प्रदेश तथा देश में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती के साथ ही किसान समृद्ध होंगे। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डा सुशील सोलोमन ने सभी नवोन्वेषी कृपकों तथा उनके साथ मिलकर काम करने वाले कृषि विज्ञान केन्द्रों के अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी।

डा. एके साह, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने कहा कि इस सफलता से प्रेरित होकर संस्थान निकट भविष्य में गन्ना उत्पादन तकनीकों पर इन क्षेत्रों में नवीन तकनीकों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से सघन प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेगा। जिससे गन्ना खेती में विविधीकरण के प्रयोग से किसानों की आमदनी दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगी। बाराबंकी जिले के किसान रामसरन वर्मा केला की खेती से प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख रुपये तथा टमाटर की उन्नत खेती से तीन से चार लाख रुपये का लाभ अर्जित कर रहे हैं।

सहारनपुर के प्रगतिशील किसान सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ 3 से 3.5 लाख रुपया अर्जित कर रहे हैं। इसके अलावां वह सिंघाड़े की खेती तोड़ाई बाद मेंथी, लोबिया, फेंचबीन तथा करेला एवं लौकी को मचान पर खेती कर अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं। सहारनपुर के ही किसान राजपाल सिंह वर्ष 2000 में लीची तथा आड़ू की खेती शुरूकी तथा तीन वर्ष के बाद लगभग 5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर लीची उत्पादन कर रहे हैं साथ ही 2 से 2.5 लाख रुपया आड़ू से तथा 1.5 लाख रुपया प्रति हेक्टेयर आलू की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। सहारनपुर जनपद में प्रचलित शहद उत्पादन से भी राजपाल सिंह 1.20 हजार सलाना आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। लखनऊ के देवनारायण पटेल की सफलता की कहानी भी इन कृपकों से भिन्न नहीं है। उन्होंने बताया कि 1.4 हेक्टेयर भूमि से नकदी फसलों की खेती कर प्रतिवर्ष लगभग 4.0 लाख रुपये शुद्ध लाभ होता है। इसके अलावा धान, गेहूं की परंपरागत खेती से किनारा करते हुए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा, गन्ना आदि नकदी फसलों की तरफ रुख करते हुए अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं।

4 कल्पतरु एक्सप्रेस
www.kalptaruexpress.com
लखनऊ, मंगलवार, 28 मई 2013

अनुकरणीय

नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों में किये गये नये प्रयोग तथा अर्जित आय को किया प्रस्तुत

सफलता की कहानी, किसानों की जुबानी

कल्पतरु समाचार सेवा

पीजीआई, लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र की वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन नवोन्वेषी किसान सम्मेलन सम्पन्न हुआ। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के 17 नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों पर किये गये नये प्रयोग तथा इससे अर्जित आय को प्रस्तुत किया जो कि वास्तव में दूसरे किसानों के लिए प्रेरणा देने वाले उदाहरण हैं।

सत्र की अध्यक्षता करते हुए डा. केडी कोकाटे, उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृषकों की सफलता से कृषि विज्ञान केन्द्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों से अनुरोध किया कि खेती में इस प्रकार के अनूठे प्रयोगों को जरूर उजागर करें तथा इन प्रयोगों को क्षेत्र के अधिक से अधिक किसानों को अपनाने के लिए प्रेरित करें। इससे प्रदेश तथा देश में कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी तथा हमारे किसान समृद्ध होंगे। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन ने सभी नवोन्वेषी कृषकों तथा उनके साथ मिलकर काम करने वाले कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों को उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी।

बाराबंकी जनपद के किसान राम सरन वर्मा ने टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती में प्राप्त सफलता के प्रस्तुतीकरण से सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों तथा साथी किसानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

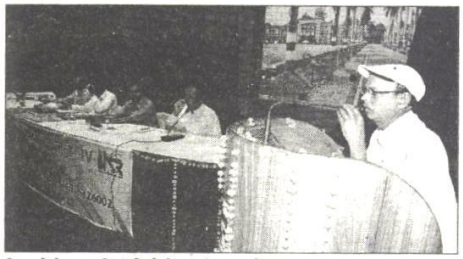

किसानों ने बयान किया कि कैसे बढ़ायी उपज और आमदनी

- कृषि विज्ञान केन्द्रों के कार्यक्रम समन्वयकों से खेती में अनूठे प्रयोगों को उजागर करने तथा अन्य किसानों को इन विधियों को अपनाने के लिए प्रेरित करने का किया अनुरोध

सहारनपुर के प्रगतिशील किसान सेतपाल सिंह करीब 40 एकड़ भूमि में सघन सब्जी उत्पादन कर प्रति एकड़ तीन से साढ़े तीन लाख रुपये अर्जित कर रहे हैं। सेत पाल कहते हैं कि सब्जी की खेती से उनको दैनिक आधार पर आमदनी प्राप्त होती है जिससे उनको कभी भी पैसे की कमी का एहसास नहीं होता। सेत पाल अपने खेत में सिंघाड़े के खेती की तथा सिंघाड़े के तोड़ाई उपरांत मेथी, लोबिया, फ्रेंचबीन तथा करेला एवं लौकी की मचान पद्धति से खेती कर अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं।

सहारनपुर जनपद के ही अन्य किसान राजपाल सिंह ने वर्ष 2000 में लीची तथा आड़ू की खेती शुरू की तथा तीन वर्ष के पश्चात लगभग 5 लाख रूपये प्रति हेक्टेयर लीची उत्पादन से प्राप्त कर रहे हैं। लखनऊ के देव नारायण पटेल की सफलता की कहानी भी इन कृषकों से भिन्न नहीं है। पटेल ने खेती में अपनी सफलता को बताते हुए कहा कि 14 हेक्टेयर भूमि से नकदी फसलों की खेती कर प्रतिवर्ष लगभग चार लाख रुपये अर्जित कर रहे हैं।

कुशीनगर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसान बसन्तकालीन गन्ने के साथ भिंडी तथा लोबिया एवं शरदकालीन गन्ने के साथ प्याज और लहसुन की खेती कर अपनी आय बढ़ा रहे हैं। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एके साह ने कहा कि इस सफलता से प्रेरित होकर संस्थान निकट भविष्य में गन्ना उत्पादन तकनीकों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेगा। इससे गन्ना खेती में विविधीकरण के प्रयोग से किसानों की आमदनी बढ़ेगी।

जनसंदेश टाइम्स
लखनऊ, मंगलवार, 28 मई 2013

किसानों ने बयां की सफलता की कहानी

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित कृषि विज्ञान केन्द्र की वार्षिक कार्यशाला के दूसरे दिन नवोन्वेषी किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के 17 नवोन्वेषी किसानों ने अपने खेतों पर किये गये नये प्रयोग तथा इससे अर्जित आय को प्रस्तुत किया।

बाराबंकी से आये किसान रामसरन वर्मा ने टिश्यूकल्चर तकनीक द्वारा केला की खेती में प्राप्त सफलता के राज ने सभागार में उपस्थित वैज्ञानिकों, कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों तथा साथी किसानों को आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। उन्होंने बताया कि केले की खेती से प्रति एकड़ 2 से 2.50 लाख रुपये का लाभ अर्जित कर रहे हैं। केला के साथ टमाटर की उन्नत खेती कर 3 से 4 लाख रुपये का अतिरिक्त कमा रहे हैं। कहने को तो उनके पास सिर्फ 7 एकड़ जमीन है, लेकिन अपने अथक प्रयासों की वजह से आज वह अस्सी एकड़ खेत में केला, आलू, टमाटर, मैंथा तथा अन्य सब्जियों की खेती करके प्रदेश एवं देश के किसानों के लिए आदर्श बने हुए हैं। राजधानी के देवनारायण पटेल की सफलता की कहानी भी रामसरन वर्मा से जुदा नहीं है। उन्होंने खेती में अपनी सफलता को बताते हुए कहा कि 1.4 हेक्टेयर भूमि से नगदी फसलों की खेती कर प्रतिवर्ष लगभग 4 लाख रुपये शुद्ध लाभ अर्जित कर रहे हैं। धान, गेहूं की परंपरागत खेती से किनारा करते हुए सतावर, हरी प्याज, लहसुन, मैंथा, गन्ना आदि नगदी फसलों की तरफ रुख करते हुए अपनी आमदनी को निरंतर बढ़ा रहे हैं। इसी तरह कुशीनगर तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश के

कार्यशाला

दूसरे दिन कृषक सम्मेलन हुआ
नवोन्वेषी किसानों से कृषि विज्ञान केन्द्र होंगे लाभान्वित

किसान बसन्तकालीन गन्ने के साथ भिंडी तथा लोबिया एवं शरदकालीन गन्ने के साथ प्याज और लहसन की खेती कर अपनी आय दुगुना कर रहे है। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद 'कृषि प्रसार' नई दिल्ली के उप महानिदेशक डॉ. केडी कोकाटे ने कहा कि इन नवोन्वेषी कृषकों की सफलता से कृषि विज्ञान केन्द्रों को भविष्य में और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा मिलेगी।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एके साह ने कहा कि इस सफलता से प्रेरित होकर संस्थान निकट भविष्य में गन्ना उत्पादन तकनीकों पर कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से सघन प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करेगा, ताकि गन्ना खेती में विविधीकरण के प्रयोग से किसानों की आमदनी दिन दूना रात चौगुना बढ़ायी जा सके। *वसं.*